केवल सरकार पर निर्भरता ठीक नहीं...!

आलेख -महेश तिवारी

हम बेहतर और सुगम जीवन की चाह रखते हैं। लेकिन भौतिक सुख-सुविधाओं में इतने तल्लीन हैं कि ख़ुद के विनाश की लीला तो लिख ही रहें हैं, साथ में प्रकृति और पर्यावरण को भी व्यापक क्षति पहुँचा रहे। मान्यताएं है, कि प्रकृति ईश्वर की दी हुई मानव को अनमोल धरोहर है। तो उसे सहेजने की जिम्मेदारी और फर्ज भी हमारा हुआ। पर हम आज इतना सोच कहाँ रहें हैं। स्वविकास की अंधी-दौड़ में हमनें उन सभी पहलुओं से मुँह मोड़ लिया है - जो एक नागरिक होने के नाते हमारे ख़ुद के वजूद और वन्य-जीव के साथ प्रकृति के संरक्षण के लिए आवश्यक है। आज के दौर का दुर्भाग्यजनक पहलू यह है कि हम सिर्फ़ अधिकारों के संरक्षक बन कर रह गए हैं।

सबसे पहले हम बात करें प्लास्टिक से होने वाले नुकसान और इस नुकसार से मानव-जीवन और प्रकृति को कैसे बचाया जाएं। हैरान करने वाला एक तथ्य यह है कि अतिघातक प्लास्टिक पर रोक सरकार लगाये, यही हमारा सोच हो गया है। यह कैसी रवायत है ? जब हम अपनी सोच और आदत में बदलाव नहीं लाएंगे। आगे होकर नहीं सोचेंगे। सरकार पर ही निर्भर रहेंगे तो बात बनने वाली नहीं है। हरेक जानता और मानता है कि प्लास्टिक का उपयोग बेहद विस्फोटक है। आने वाली पीढ़ियों को इस मुष्किल से जूझना होगा। बहुत स्पष्ट है - हमें इस दिषा में स्वयं कदम उठाना होंगे। प्लास्टिक का उपयोग बंद करना होगा। वह प्लास्टिक (पोलीथिन और ऐसे अन्य तत्व) जो हमारा जीवन कष्टप्रद करने वाला है।

दरअसल आज के दौर में प्लास्टिक प्रदूषण एक गंभीर वैश्विक समस्या बनती जा रही। हमारा देश भी इससे अछूता नहीं है। हम उस प्रथा के संवाहक भी रहें हैं, जब हमारे बुजुर्ग घर की चौखट से किसी काम के लिए निकलते ही कपड़े-जूट आदि का थैला लेकर निकलते थे। पर आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में हमने इस मान्य परंपरा को भूला दिया है। बात करें विश्व पटल की तो एक वर्ष के भीतर ही अरबों प्लास्टिक के बैग प्रकृति की गोद में फेंक दिए जाते हैं। जो सिर्फ़ प्रकृति की गोद को बंजर ही नहीं करती। अनगिनत समस्याओं की उपज के कारक भी बनते है। तो ऐसे में ये प्लास्टिक बैग कहीं नालियों के प्रवाह को रोकते हैं, और आगे बढ़ते हुए वे नदियों और महासागरों तक पहुंचते हैं। कहीं ये पशुओं के जीवन चक्र में जहर घोलने का काम करते हैं। कुल जमा एक मानवीय कृत्य के कारण काफ़ी बड़ा नुकसान प्रकृति के साथ बेजुबान जानवरों और ख़ुद मानव को भी उठाना पड़ रहा है।

अगर हम प्लास्टिक की प्रकृति देखें तो यह मृदा प्रदूषण का अहम कारक है। आज हम कहीं भी नज़र उठाकर देखेगें, तो सामान्यतः प्लास्टिक ज़मीन पर पड़ी दिख जाएंगी। जो हमारी धरती माँ की गोद सूनी करने का काम करती है। असल में जहां भी प्लास्टिक पाई जाती है, वहां पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति क्षीण हो जाती है। साथ ही साथ ज़मीन के नीचे दबे दाने वाले बीज अंकुरित नहीं हो पाते। जिस कारण उपजाऊ भूमि बंजर में तब्दील हो जाती है। यूं देखा जाए तो सामान्यतः सभी तरीक़े के प्लास्टिक प्रदूषण का वाहक हैं। प्लास्टिक का निर्माण कैसे होता है?

यह अमूमन पेट्रोलियम पदार्थों से उत्सर्जित सिंथेटिक रेजिन से बना है। रेजिन में प्लास्टिक मोनोमर्स अमोनिया और बेंजीन का संयोजन करके बनाया जाता है। प्लास्टिक में क्लोरीन, फ्लोरीन, कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन और सल्फर के अणु शामिल हैं। ऐसे में अगर हम बात प्लास्टिक से होने वाले नुकसान की करें, तो इसके विनाशकारी प्रभाव दृष्टिगत हो रहें हैं। आज दुनिया में हर देश प्लास्टिक प्रदूषण की विनाशकारी समस्याओं से जूझ रहा है।

शहरी वातावरण को तो प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण ने पूरी तरह से अपने आगोश में समेट लिया है। शहरी जीवन इसलिए ग्रामीण अंचलों से ज्यादा प्लास्टिक प्रदूषण से प्रभावित है, क्योंकि सुदूर गाँवों में आज भी लोग कुछ हद तक कपड़े आदि के थैले का उपयोग कर लेते हैं। पर शहरी जीवन में बाहर से कुछ भी लाना है, तो प्लास्टिक की थैली ही जीवन का अपरिहार्य अंग बन गया है। ऐसे में लगता है, कि ज्यादा शिक्षित हो जाना भी परम्पराओं और अपनी पुरातन सभ्य आदतों के लिए ख़तरनाक स्थिति पैदा करती है।

एक तरफ़ हम बेहतर और स्वस्थ जीवन की होड़ में लगे हुए हैं। तो दूसरी तरफ़ हमारी भौतिकवादी सुख-सुविधा की सोच के कारण अपने समाज और प्रकृति के अस्तित्व को चुनौती देने का कार्य कर रहें हैं। अनुसंधान बतो हैं प्लास्टिक की बोतलों और कंटेनरों का उपयोग बेहद खतरनाक है। एक प्लास्टिक के गिलास में गर्म पानी या चाय पीने से कैंसर तक हो सकता है। फिर समझ नहीं आता क्यों हम प्लास्टिक से मोह छुड़ा नहीं पा रहे। वैसे भी हम उस सभ्यता और संस्कृति से जुड़े रहें हैं। जहां पर केले के पत्ते पर भोज कराया जाता रहा है। कुल्हड़ में चाय पी जाती थी। हमने तथाकथित आधुनिकता के आगे सब बातों को बिसार दिया है। एक अनुसंधान यह भी कहता है, कि जब सूर्य के तापमान से प्लास्टिक गर्म होता है, तब उससे हानिकारक रासायनिक डाई-ऑक्सीजन का रिसाव होता है। जो किसी भी जीव-जंतु और प्राणी के लिए बेहद हानिकारक है।

हम प्लास्टिक के अन्य दुष्परिणामों पर चर्चा करें - तो इसके अलग-अलग तरीके के नुकसान हैं। जैसे पाइपों, खिड़कियों और दरवाजों के निर्माण में इस्तेमाल पीवीसी विनाइल क्लोराइड के पोली-मराइजेशन द्वारा बनाई गई है। इसकी बनावट में प्रयोग होने वाला रसायन मस्तिष्क और यकृत का कैंसर पैदा कर सकता है। इसके अलावा कई तरह के प्लास्टिक के निर्माण में फार्मलाडेहाइड का उपयोग किया जाता है। जो रसायन त्वचा पर चकते पैदा कर सकता है। इसके इतर इसके साथ कई दिनों तक संपर्क में रहने से अस्थमा और श्वसन रोग भी हो जाते हैं। इसके अलावा जब प्लास्टिक की थैली या ऐसे अन्य तत्व घर से बाहर मुक्त वातावरण में पहुँचते हैं, तो वह जीव-जंतु और मृदा के साथ प्रकृति के लिए महाभिशाप बनते हैं। ऐसे में अगर प्लास्टिक को जला दिया जाए, तो वह प्रकृति पर जीवन के लिए ओर भी हानिकारक है।

हमारे महानगरों और शहरों की क्या स्थिति हो चली है, यह बात किसी से छिपी नहीं है। देष की राजधानी दिल्ली स्वास्थ्य की दृष्टि से रहने योग्य नहीं बची है। अन्य महानगरों और बड़े शहरों के हाल भी दिल्ली जैसे ही हैं। हरियाली गायब है। हर तरफ सिर्फ़ और सिर्फ कूड़े के पहाड़ बढ़ते ही जा रहे हैं। रिपोर्ट्स हमें आगाह कर रहीं पेड़ जो वर्षा कराने में काफ़ी महती भूमिका अदा करते हैं, उनकी हिस्सेदारी हमारे देश में चिंता की कगार पर है। दुर्भाग्य देखिए पॉलीथिन को बनाने, रखने और इस्तेमाल करने पर दिल्ली ने 2002 से प्रतिबंध लगा रखा है। मगर यह

प्रतिबंध कागजी बना हुआ है। अन्य क्षेत्रों में भी हाल ऐसे ही हैं। एक हालिया अध्ययन कहता है 60 बड़े शहरों से प्रतिदिन लगभग 4,059 टन प्लास्टिक कचरा निकलता है। पूरे देश की बात करें तो इसकी मात्रा 25,940 टन प्रतिदिन है। लगभग 60 फ़ीसद प्लास्टिक कचरे को एकत्रित और पुनर्चक्रण कर लेती है तो उसकी सराहना की जानी चाहिए। मगर शेष 40 फ़ीसद तो हमारे प्रकृति और पर्यावरण को हानि पहुँचा रहा।

प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियम 2016 के तहत तो 50 माइक्रोन से कम आकार के प्लास्टिक बैग और अन्य उत्पादों पर प्रतिबंध लागू है। अब तक लगभग 21 राज्य और संघ शासित क्षेत्र भी इस नियम को अपना चुके हैं। सरकारें नियम बना सकती हैं। कड़ाई से उसको लागू कर सकती हैं, लेकिन किसी की आदत को तो नहीं बदल सकती। क्यों नहीं पॉलीथिन की बंदी के लिए जनांदोलन छेड़ते, क्योंकि आँकड़े कहते हैं कि लगभग 20 से अधिक गाएं प्रतिदिन पॉलीथिन खाने की वज़ह से मर जाती हैं। विस्फोटक हालातों से निपटने के उपाय हमें ना केवल ढूंढने होंगे, बल्कि सरकार के भरोसे ना रहकर स्वअनुषासन अपनकार इससे निपटना भी होगा।

(प्रस्तुतिः मनुज फीचर सर्विस)

नोटः विचार लेखक के अपने हैं, इन विचारों की जिम्मेदारी माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय नहीं लेता।

उक्त आलेख माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा शुरू की गई मनुज फीचर सर्विस के अंतर्गत निशुल्क प्रकाशनार्थ प्रेषित है। कृपया आलेख के अंत में मनुज फीचर सर्विस प्रकाशित करने का अनुरोध है।